

आ.म.संस्कृत-
298

ASMA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥

प्रथमं वाचस्पत्यु। एकदं द्वितीयकं तृतीयकं
चतुर्थकं गणकं पञ्चमकं ॥ अथादस्यैवमेव यच्च विद्वन्वितायकं वसुधैव कुटुम्बकम्
अथ धर्मो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ नवमं वाचस्पत्यु दशमं विनायकं एकदशमं गणयति त्वेव
द्वादशमं कीमुक्तम् ॥ अतश्चादशनामानि उक्तानि धर्मो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ नवमं विद्वन्वितायकं
सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रथमं वाचस्पतीनामं द्वितीयं च सप्तमं तृतीयं वाचस्पतीनामं

वातुर्थेदं गमामिनि ॥ यंचमं विदुस्वामाता वनूधनं च वचमं ॥ यकमं धुयव
 फुं ह यककाकमावाहमं ॥ नवमं वाकधवायु दहमं सिवाचनगं ॥ प्रकादगं
 रवं वार्यं द्वादशीं गणीवर्षुकी ॥ जर्वशी द्वादशीनामं सिद्धिविद्याधवाकथं लीमा
 ता सर्वकलात्वं वक्षमां यत्र मं स्वरी ॥ ॥ या कृष्णं दुदुखालक्षानधवना या श्वत
 यमायना या वनावनदं धुमधुधवा या सुप्रवफादिता या वक्राश्चिंतारखनयम
 थावि दधेयदावदिता सामाया दुसप्रस्वतिरगवती निश्चयया गायहा ॥ श्रीति

सत्रस्वरी द्वादशीनामसमाय ॥  ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ प्रथमं महाद
 र्वद्वितिर्यंचमहध्वनं नितिर्यं सफलनामं वदुर्थं वचमं धुजं नं ॥ यंचमं कृष्णवासी च वा
 ककामां गणायनं ॥ यकमं दवदवमं नीवकं धुं वचाहमं ॥ नवमं च ध्वननामं दग
 मं यावति धुयं ॥ नूद प्रकादशीनामं द्वादशीं गिवमूचत ॥ गतधुद्वदशीनामानि नि
 संधायत्यथ नवं गमध्वनतद्यनयेव वक्षहायुनृत्यकी ॥ प्रितानघातकयेव सुवाया
 विधविद्यक सलतागतद्यातिच मिश्रविग्रहघातक ॥ मूचत सर्वयायथा जीववाकी

गच्छति॥ जीवकर्मयान् जीवसकयवदव जीवमात्मे जीवार्हेर्म जीवमात्रेयमतांतां
प्रसमाप्तिमदा जीवो मनुकाश्च न दत्तानां गवांकाटिप्रववति यंचकाटिदुर्लभानां
तदुर्लभिवदस्यते॥ **श्रीतिसद्विदद्यादणनामधुगयमाय॥**

१॥ श्री कृष्णाय नमः॥ शत विन्दमाधवमकुन्दरुनमूत्राणाम्हा जीवणं जीवितं
प्रलयात् । कामादनाश्रुतज नार्द्धनवासुधवत्या आराययच्छति सक्त
तमामननि॥ गीमाधनीधकवि पादवनील लकष्वर्कै ० कैठरविधाकम

अङ्गयात् । दूरीणस्वशुयनः शमनचक्षुः कृष्णत्या आराययच्छति सक्त तमा
मननि॥ विष्णुर्हसिं हसधसुधनचक्रमात् । गीनीयत गिनिणं कजचतुचूठ
नाजायणामननिवर्द्धनयात् । त्या आराययच्छति सक्त तमामननि ॥
मृत्पुष्पाणि विषमकृष्ण कामायाशीकान् यी गवसनीवदनील कलना
लोच॥ ०॥ शानकलिवसना शिदलोकनाथ त्या आराययच्छति सक्त तमामन
नि॥ लक्ष्मीयतमधुविधायनमाहमद्यहीकांस्तुदिग्वसनं कयिनाकयात् ॥

आमनकन्यधरणी धनयधनारत्या अरुताय ष्टितिसक्तमामनक्ति ॥
सर्वेष्विष्टयूत्रसूत्रनयवदवधकृष्यथवगनृष्वजर्णयाद्याकावगातरन
धकालमृगांकमीलत्या अरुताय ष्टितिसक्तमामनक्ति ॥ धीनामनाद्यवत्र
मध्वनवावक्ष्यत् रूगममनयत्रियायमध्वमविनाथ ॥ चाधूनमर्दनरुषिकय
तमृगात्रत्या अरुताय ष्टितिसक्तमामनक्ति ॥ गुलितगित्रीगत्रजतीग
कवर्गसर्कगयुलासनसुतातनकनिताग ॥ रूगविनरुवरुतयतयू

गत्रत्या अरुताय ष्टितिसक्तमामनक्ति ॥ गयीयनययनव
सुधवदुभाकर्यनगोनरुवरुष्वजगालभध ॥ गवर्द्धभाद्वैरक्षधर्मवनी
ध ॥ गमयत्या अरुताय ष्टितिसक्तमामनक्ति ॥ खानविशवनयिनाकधन
सनात्रकृष्णिनद्वकनलाकनकलम्यात्राविश्वध्वरुषियथगर्द्धजटाकलाय
त्या अरुताय ष्टितिसक्तमामनक्ति ॥ मृष्टरुनाधिकसमनसुवानरुषी
सुधतिनीलसिनलनयवकन ॥ सनायकानृष्टरुषीविजकधम

गीय कृया दिमीसुज मरु सयमं तय ॥ ॐ त्वं द्विज नृनिज रुह्य गणानस देव
संनिख्य अदवनि गतसहि धर्मराज ॥ अथ यिय रुनिहना के धरा धना थीतद
वत ॥ यूननर हा यत्रिवे ऊनीया ॥ ॥ अगस्तिनूवाच ॥ या धर्मराज वत्रितील
लित यवन्मी नामा वली सफल कलमय वी ऊरुकी ॥ धीनाग कोरु रुह्य ॥ ॥ गिरुष
हस्य निख्य ऊय नस्तन वसं नयि वतस माउ ॥ ॐ तिगृवन् कथं वमी निव ॥
मीयि यतय ॥ यरुष वरु ॥ यूनता दद मयि न सा म्युर्व ॥ ॐ तिपी स्वदयू

रा। काणी स्व। युयसला कवतून नाम मरु मा ध्याय ॥ ॥ गुरुमसुगुरी ॥
अगस्तिनूवाच ॥ विना साननगं मया नृमी जन्म निवर्धक ॥ उया या कनमस्य
यशन सानन रुनरुत ॥ अगका ना अय मूनी मान स्या यद ता सनी ॥ इव द सो
कन सानी गमी सानन कथं रुवत ॥ दान म्वा धवर्त वाध मनु ॥ फा र्ज ऊया धवा ॥
तीध कनारिष कावा दवता वा सने रुवा ॥ यय सि किं चित् रुकु गी मसान रुनी
यदी वि धा कने न मा रु हातु दयय ता यम ॥ लहान वद रुक या ना गी मग

व (ल) श्वरविः श्वरयि व सा वे लू वै सकन व सु क ज्ञ मा ना त सा न दा सकन जि
हि द दान मा सी ॥ ३ ॥ नू यानि न म श जि य लू क लाः सु रयी वानि स ना रु न स ना ति
त यी य सु व श्व १ नी लो ल्य ना न य न वि दू न ग स्य ज्ञानि त सा न दा सकन जि हि द दान मा
सी ॥ ४ ॥ स नू लू का श्व त व म दू य सा न दा य पा ता ल म सु रि द सा न य दूः जि ता नि न
सं नू दि वा क स नू स व य का त सा न दा सकन जि हि द दान मा सी ॥ ५ ॥ स सा न सा न व व

ना न व सु प्र स ना दे वा न ना ज्ञ य स ना धि य कि न्ना नां १ कू म ना रु न स ना व न सि हि
य न्ना त सा न दा सकन जि हि द दान मा सी ॥ ६ ॥ क र्प य र्ग य त्रि य त्रि त ना सु ना दि य दू
सु वा स ग न व द न व द्वा ता नि ति ह्यं ग्र न स्ये जि न सा त व म क र्ण वं त सा न दा सकन जि हि
द दान मा सी ॥ ७ ॥ ष ड् क य दू न व रु दि त म कु न जि स र्वा र्थ सा ध क ज ना स य ति स भ व न
सं दू न गं स्य रु व द श्व वि ना ग का ति त सा न दा सकन सि हि द दान मा सी ॥ ८ ॥
रू ति श्री सा न दा दे वि स्ता र्ग स मा क ॥ ९ ॥ १० रु म सु स र्व दा क ल्या मा ॥

१ श्रीदुर्गाया नमः ॥ लवनेन मण्डितं चानिलेन मण्डितं च धूपेन मण्डितं च
 यनमः सुन्दरं नमः ॥ कात्यायने नमः ॥ कालनाथे नमः ॥ महागौरी नमः ॥ सिद्धिदा
 त्र्यै नमः ॥ नूतिनवदुर्गा शोभाय नमः ॥ नामनामः शिवशिवशिवशिवनामः शिव
 नामशिवशिव ॥ श्रीगलपाने नमः ॥ ॐ यथैव गुह्यं कथयन् वन्दितं यथाह्वये
 बुकासितं ॥ आदिविष्णु रोगमदिविष्णु मवितं शिवशिवं ॥ धन्यमथवा
 धन्यं लभेत् कूलधन्यं यदयं विष्णुवन्दनं धन्यं धन्यं यमः ॥ नित्यं सितलवान्वाले सखा

७१.

वने ॥ १॥ चान्वन्दनं गुह्यं लयनं गन्धधूपनिवासितं च तस्मादिदं यथाह्वये मधुरनिद्रा
 तस्यैवादाशदाशीवननवन्दितं सावकं शिवशिवं ॥ धवलसुनिमसु कान्तिविल
 सितं श्रीवालमद्रुगसुन्दरम् ॥ २॥ धनिधुस्तनमलितं भारुनविठ्ठलं च वन्द्यं ॥ नित्यं
 विष्णुनकंठलावतियिवद्वयं यथाधनं ॥ असुररुक्मिणं विष्णुवन्दनं रुक्मिणं च लला
 तं ॥ ३॥ धनवन्दनं नित्यं वन्दनं श्रीवालमद्रुगसुन्दरम् ॥ ३॥ मन्त्रलिङ्गनिकरिणं कल
 म्बननं माहिताकृतनयनं च नलं रुक्मिणं च ललातं नित्यं वन्दनं कथितं सवदं नमः ॥ रुक्मिणं

७१.

लाहित नागरुशिवत व्यान ज ह्ला यविस्तु कं कर्क कर्क लुन किं
किं नवन कं यं वं रुगम ली तं । मे शानवा जित रु समनति गानि सु
गाधक नेवलं यनमसुदन द अं कन पुलम्य श्री धन धन ॥ ४ ॥ सकन शु
जकरु उान यान जगत र्थ सन का नि तं यनममा तम द अ नूनम स
नम्य जग दि धन वि कूर्व लु रु द अ हल रु नि शिवत जा ग वि वि किं तं
या द ति यति यि धन सी व पुलम्य श्री धन धन ॥ ५ ॥ व क्त सा ध व नि ख

वा स अ द अ दि ग व ति स वि तं समा धि जन मो नि मान न ध्या य त ह द
यां वु रुं मरु ज उ म ध स ने क ति दि व ह्म न व का जि तं वा न ना जन
द य ना स न पुलम्य श्री धन धन ॥ ६ ॥ न न क ज ल्हा ज य ति त रु रु ज वि
ख स सा ग न ना व कं ना ग श्व ग क क न ना स न द रु न द नि द्र मा व न
पु न न र्ज न क दि न द्र यि क नि स्तार्न कृ य या नि धि स त न सा ध क सि द्दी
दा य क पुलम्य श्री धन धन ॥ ७ ॥ ग मा ग म स क न ज ग म श गि नि ग

लतायकं विविध नूयमनेक रं दक रं ख रं रव सा गनं अ ज न कि ल
 न रु द या नं द न सं कृ त सि व सर्व दा ज न न मा ज्ञि त रा ज या नि रु य न
 म्य श्री धन श्व ने ॥ ८ ॥ धन श्व ने क वा हा न के र ग न के श नि निर्मि
 तं यं यति प्र वि रु र न रु ग त द श द व श दा सि वै रु र न रु द य सं
 कृ स य के ज नं म न नि सि रं रु दिं कृ या म न का म सि दि प्र न म्य
 श्री धन श्व ने ॥ ९ ॥ गि श्री धन श्व ने मा हा दे वा कृ क स मा क ॥

२५३

भा ४

(श्रा गन श्रा य न म ॥ श्र य ग य ग न य ति वि दि ह्म न र श सि न्ध व गि त्व म त्व म अ
 ग न ने ॥ १ ॥ नृ क द न म हा का रु द ग श न न मा त व र्ण म हा दि की म स्र क वा रु
 न ॥ २ ॥ व रु वा रु प्रि न य न म रु श्रा न य प न शु रं कृ श व न मा द क वा न
 य ॥ श्रा न मा नं सि दि दा ता वि द्यी वि ना श क ध र्म अ र्थ का म मा श्रा सि दि
 प्र दा य क ॥ ४ ॥ श्रा न मा न मा ह्म न नि मि रु द य य दि य सि दि वृ धि ह्म न दा रि स
 र्ध रु ता धि य ॥ ५ ॥ श्रा न मा न मा वा न व न्द्र न ला त रु श्मि त व कृ तु न्द्र ध र्म क तु द

दानियुजित ॥ ७ ॥ नमानमानमार्वमोदवसलनसुलक्षण. दवियुगगताधिवनमसु
 गने श्री ॥ १० ॥ नमानमानमावातवालकलूममवन. समुद्रजमाकृयाद्विष्टिया
 तकन ॥ ११ ॥ निर्मितजगतवि. श्रीगनजसुक. मनवाकाकासीसिद्धिगन
 शयनक ॥ १२ ॥ ऋतिश्रीगनजसुक ४ समाक ॥ १३ ॥ गुरुमस्तकयानंशु
 हरी ॥ श्रितस्तन ॥ लायानाम ॥ १४ ॥ गनस ॥ सायनम ॥ १५ ॥ सनश्रितिश्रवायनम

१॥ श्री ३ रुवा नमः शानमाता नवाता नमः पूजिता न पृथि न रुखा
न रुखा न नगाया न विलं न वृत्ति नमः व. गति लं मति लं व म कारुणी ॥
१ ॥ रुवञ्चानया नमहा इ सुव रि नोः प्रपात ४ प्रका सि प्र ला सी प्र म रु कु मा
या कु ने ज्ञा प्र न द्व ४ सदा गौ ई गति लं मति लं व म कारु खानी ॥ ३ ॥
१ न ज्ञाना मि पृथ्वी न ज्ञाना मि नी र्थः न ज्ञाना मि भुक्ति ल र्य वा किं भगव न न
ज्ञाना मि रु कि गति नियायिमान गति लं मति लं व म कारु खानी ॥

३॥ यत्तु स न भर्गः स न भर्गः गच्छति महर्गः दिनर्गः निशा स वक्ष्यति न न जा
 ना मियार्गः न न सदाहः गतिस्त्वमिति स्त्वमिति भका रुवा नी ॥ ४ ॥ क क
 मी क स ग क व वि ॥ क ना यान न हिन ॥ क दा यान ली न श क दृष्टी ॥ क ना
 स्ता सदा स्ता रुका मिः गतिस्त्वमिति स्त्वमिति भका रुवा नी ॥ १ ॥ न ज न ना मि
 म नु न च सो ग्र य नुः न ज न ना मि य ज न न ना न क रु त्वं न ज न ना मि त त्वं न रु
 किं न न किं गतिस्त्वमिति स्त्वमिति भका रुवा नी ॥ ५ ॥ विवाद विषाद प्रसाद प्र

(ज्या इति म संनः म जय न म)

वा स न न यान ल य व र्ग स ह म (प्र) ज न त्व स ल त्व सदा मां प्रवा हि गतिस्त्व
 मिति स्त्वमिति भका रुवा नी ॥ १ ॥ ज न ना त्व द वि उ क ना दि प्रयु का म रु दि
 ना दी ना सदा रु रु व क्क ॥ वि ल य वि र्क सदा मां प्रवा हि गतिस्त्वमिति
 स्त्वमिति भका रुवा नी ॥ २ ॥ रु रु य ० गि च रु क्क क ण भ न त्व स म यः स रु व नि
 स न य रु व र्ग रु व ल के न ध न द रु व ध नो र्मा न नी या नृ यानां व द्म
 न न रु ली रु की रु रु क वि न्दु ॥ ३ ॥ रु ति ग्री सं क ना वा य वि न न द व्वा

॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥



228

228

८. भगिया. रिखाह र्माक दक्षिण दिशा. वरिवाय. वाक सासु
 याहूनी नरमाता. र्माहा उवमाया याशाय ॥ २ ॥ हेतु र्माया यमति
 उदहमक नशयू. रिहम नूबशन. दक्षिण. यममा उदकाया शिवा
 या. काशरुन नजि. भगिया. देवा उदकाया यव दिशा. दक्ष
 म. वरिवायमान ॥ ४ ॥ हेतु. यका उ. काक. या यमति र्माया यरु
 भवता या. भगिया. दक्षिण श्रया. मभन श्रया. वरिवा.

॥ १ ॥ हेतु. यका उ. काक. या यमति र्माया यरु
 उ. रुतामनमजि. भवता श्रमा. यथुं शि. भगिया. देवि यादुर्वन.
 पितगन यादुर्वन. देगन यादुर्वन. निष्कय जामान ॥ ६ ॥ हेतु. भव याके
 उनेमान. का. यदशमद यरु. आभायमति. माहादश य. उ. क
 यिला या. यायमति. भगिया. उद दिशा. वरिवायमान ॥ ८ ॥
 हेतु. त. उ. का. वि. ननाया. तुवदश य. लागी या. देगन या य
 या. वरिवा. ॥ १० ॥ हेतु. यका उ. का. याके यमान. यका सति.

[illegible]

लोता दिवाडा अग्याता थया के अ वलि विधानया ॥ १३ ॥ रु
 त थ कोर्य विदिनि अ बा ड थ स अ क्रूर अ रु न क ह न न ल्या न थ क
 य म गि ध न थ का य अ न ह स ड मि ता ज न या र वा न ल्या
 न वि ला स आ न रु न क वि र ग न रु न थ स व ड व रु या ड या ड अ न
 स थ म गि सि दि रु न ॥ प्रा नी या का क गि न रु न ला न य लु य ह द अ ना या न
 दा न या ज व लि वि धान मा न ॥ १४ ॥ ह ड हिन ४ रु अ वि ला स म न प्रा नी य अ म

दि सा स न उ अ ध गि मा इ. अ ना या इ ख न ज न उ म स्व म्भं व नि. ज्ञा या ॥ १५ ॥
हं उ. कार्ज्यां रु य उ. व लु अ ना न ख नि उ. न र्ना द य हं उ. शु न न उं ग
म ध्वा न म न. ना गा या. यं क्ति म १५. म १५ न सु. इ ख न इ वा नि वि धा न
या य. द म न सु य जा ॥ १६ ॥ हं उ. कार्ज न उ अ ध. हा न या. छ न म न ह
ना म न न. यि ल या र्व द न मा न. य या ध्वा न तां. न म का य म न. ना गि या.
यं क्ति. दि सा स य द इ. य जा मा न. व नि द्या य. ॥ १७ ॥ हं उ. कार्ज
या य. अं द ह द डी. १७ म्भं अ रे कं म क्ता. थ अ क्ता अ क्ता या व थ अ क्ता अ

ग हं य. ना गा या. क न क्ता म्भं इ. क्ता अ ग ह य द मा न. क्ता म्भं व द
उ. य वि न दि सा अ य द इ. व नि द्या ॥ १८ ॥ हं उ. कार्ज वि ता अ दि क द
ध कार्ज रि. अ वि द्या यि. ना गा या. अ र्ग न दि १८ म्भं द य न द. व नि य जा या
य. ॥ १९ ॥ हं उ. का य थ. अ वि द्या य. यि ल न वं स नि अ रि इ. मी गी या.
थ व अ जा. व क्ता या ता प र्म म या क या अ. द डी या य जा या य. व नि वि धा
न या य. ॥ २० ॥ हं उ. क न म न हं द १९ म्भं व द डी. क न म्भं मा न म्भं व
य क्ता अ सा ता. वि यि अ. ना गा या स्र सी क्ति वी न य द डी. अ ना य

ॐ वियमान् कृष्ण कायान् वरिविद्या नमान् ॥ ३१ ॥ हिर थका मजी
 निधयूमवू नो गाया पूर्वदिशान् पूडू जना वनिवायमा ॥ ३२ ॥
 हिर थया लमणिधू सिधनशां महि ओका जयज दकिनं निधू रिड
 नो गाया देग निश पूजा याय ॥ ३३ ॥ हिर देवता रुद्र निद्र रिड मन
 वृक्ष पूज अनलदर्वदयू ज नारुमा कनधा का निधू नो गाया कन
 पिसावा हा थान वनिवा ॥ ३४ ॥ हिर कार्ज जदिक सानया वनरुन
 या ॥ निधिरुयू ज नो गाया देग नश पूजा मान य किम दिशान् द

वनद ॥ वनिवा ॥ ३५ ॥ हिर अवस्थ नारुदयू ज मनदर्व विमम
 मान नश सर्वदयू नो गाया मवावू ज दू मिशया कियानदारा गुरुदान
 या ॥ वनिवा ॥ ३६ ॥ हिर शक नाया नाय काज निधू नो गाया द
 दिन दिशान् पूडू रिखाना अनश ग्मा कक्षना वलिवाय ॥ ३७ ॥ हिर
 कार्ज दूवस्थी पत्तमान निधू नो गाया गुरुदान मान उत्त दिशान् दू
 नंद थज मश उव नि किन ग्मा ता वनिवा यमा व ॥ ३८ ॥ हिर थका
 वररुन मान अतिथाकू विलं निधू नो गाया थन विखाना ग्मा क

वाकसानवृणाना पयवियवरीवाय ॥ ३२ ॥ हारु भवनं वव दजरा
डादकं गिहीशयूनागीया समभन याता ववि वृता व्याकडया
तावनिवाय ॥ ३० ॥ हारु काज थथं जिधू शयव भवन साम उवाह वा
जाया गुरु शांति मात्र यिभनदिश वनिवाय ॥ ३१ ॥ हारु काज ताज धा
उलानयादव भवनवा हदु नयन रिह नाज शिहरेभ यभं समदु नरु
यूनागीया थवकयादु निन कष यजामात्र ॥ ३२ ॥ हारु अर्थनारु स
यनश नाजादशननयू संगरदयू नागीया जंभयाय वनि विय ॥ ३३ ॥

हारु युकार्जभ शरुद कुडा^श धावन याताश रतिरिह नागीया द
दिनदिशश दूर्बनदु दि तिशन नागीता अना यश वियमान तर
यिह ययि वियमान ॥ ३४ ॥ हारु थश नुक्त डीभ धा न याडी समर्क
दु शयूनागीया यकि म दिश यादु शेन अना वनिवाय ॥ ३५ ॥
हारु धकाज मनश अवि कदयू शी वरुदु न याताश समरु शा धू ना
गाया उरु दिश दूर्बन वनिवाय ३६ ॥ हारु भवनश मिश्वडा धकं
मान अवम रिहश यिडा दूरा कै यदव पूजा या यमान अनशकि

उ. शिदुशय. नागाया. म. चेंडादर्शन. वेक्कसानदूष. विना. वनिवाय. ॥ ३० ॥
हृत्. काकुशद. नक्षय. रिं. धन. प. न. रा. ह. द. पू. अ. आ. न. न. द. श. य. अ. ना. गा.
मा. द. ग. न. श. य. का. या. प. ग. रु. दा. न. या. य. ॥ ३१ ॥ हृत्. का. कु. ता. सा. अ. य.
या. ज. न. या. ज. न. थ. क. म. जि. ध. य. रु. अ. ना. गा. या. श्रु. जि. कि. या. थ. अ. सि. मा.
द. जि. मा. वा. नि. प. ज. या. य. दू. द. न. या. अ. ॥ ३२ ॥ हृत्. क. ता. ता. अ. धा. हु. द. न.
वि. हा. ग. या. ड. त. द. य. अ. विं. ता. कू. क. न. हा. थ. अ. कू. थ. ग. था. न. द. य. म. रि. ड.
क. न. श. प. ग. रु. मि. ष. य. का. ट. क. ना. गा. या. द. दि. न. दि. हा. ग. श्रु. जि. कि.

या. थ. अ. य. ड. द. य. य. वि. य. व. नि. वा. य. ॥ ३३ ॥ हृत्. का. र्क. मन. ह. ग. अ. ट.
हृ. द. अ. थ. र्क. कू. व. य. मा. न. व. न. श. ना. रु. द. य. जि. ध. श. य. रु. मि. वि. के. रु.
य. अ. ना. ज. मा. न. द. य. ना. गा. या. प. कि. म. दि. अ. ग. द. स. न. व. नि. वा. य. म.
न. ॥ ३४ ॥ हृत्. का. र्क. या. य. थ. कू. थ. का. र्क. म. जि. ना. ना. गा. या. द. ग.
न. श. पू. ज. मा. न. रु. न. मू. ग. न. श. व. नि. वा. य. ॥ ३५ ॥ हृत्. थ. का. र्क. जि.
ध. रा. ह. थ. ग. क. व. न. रु. न. क. ल. या. त. अ. शि. दु. श. य. ना. गा. या.
द. ग. वि. श. प. ज. ग. रु. अ. नि. या. य. ॥ ३६ ॥ हृत्. का. र्क. रि. ड. रु. ता. अ.

चायमात्स्वदहनयाये. सि वि शूय. भागाया. पूर्वदिशा. दूषन. य
 नापूजायायमावहन. यजि वृष. यजवि यमा. ॥ ५५ ॥ हेतुका
 र्ज. धूमजिह्वा. भवताया. जिधू. भागीया. नून. अनदि सु. ज्ञान.
 म्माहा. यथा. नवविवाय. ॥ ५६ ॥ हेतु. कार्ज. कुक. अदिक. कक
 रूय. यात. भा. भागीया. नैवति. दिशा. दूषन. वविवायमा. ॥ ५७ ॥
 हेतु. थका. क. रिड. या. द. या. ता. मानया. ज. अती. रिड. त. मि
 नर. मन. श्वेदूय. भागीया. गरुम. रिड. दानयमान. ॥ ५८ ॥

हेतु. कार्ज. शूषन. जिह्वा. यि. हिमन. वृष. मध्या. ज. रुता
 सती. मारु. रिड. भागीया. पक्कि. मदिशा. दूषन. वविवाय
 दग. वि. यजा. याय. गरुदानयाय. ॥ ५९ ॥ हेतु. थका. कार्ज.
 म्मा. कद. म्मा. यमति. जिधूय. भागीया. द्यग. नि. यजा. गने. श
 यजा. ॥ ६० ॥ थ. ति. गना. व. ति. सु. फ. ॥ ६१ ॥ श. र. थ. थ. की. थ. थि. यका. ज

॥ ५५ ॥ हेतुका



एवञ्च योजनया नृपि मयि श्वयं थियक्ता ज्ञाय नृगनशायिनः
 नृपि नि नयति शयिनः शयिता ॥ ॥ अथ सथिनः शयिता मन्त्र
 यस्तु ॥ यन सथिनः शयिनि ॥ ॥ गन शयिनः शयिता शकृनिश
 कायायदयिनि ॥ ॥ मित्रवा शयिनः शयिनि ॥ ॥ कयान शयिनः
 मन्त्रा रुनतानि शतानि ॥ ॥ थने ताठयाक्ताय श्वयद्रना ॥ ॥ अरु
 का का ना मधनि शका कडानकविन शका क मि के व म मि न नरवादि
 द्वे स य न क मि कडानमि न य श्व रुम न २३

(नागाग्रयउग्रयन्दिनिहं॥वन्दिद्वरादखेतानिनि,सकनविद्यनविर्न
 सिनि॥हंसवाहिनिब्रह्मयिनि,सह्यपद्विनासिनि।विश्वरुवाहि
 निउग्रयिनि,प्रियनदयहासिनी॥५॥मयूनवाहिनि,उग्रयिनी
 चन्द्रमनुविनासिनि।गन्धर्ववाहिनि,विष्णुविनिकंसदेवविदात्रिनि॥
 ५॥महिषवाहिनि,सुकन्दयिनि,सकन्दसुविनासिनि।रुक्मिवाहिनि,
 ००न्द्रयिनि,सुवन्देवविभाचनि॥॥५॥यतवाहिनि,चन्द्रियिनि॥
 (व ३)

यकविठर्षहात्रिनि॥सिंहवाहिनि,सहिरयमदिनिजसूत्रगनसंज्ञात्रिनि
 ॥५॥ब्रह्मज्वादिदवसूत्रमनि,रुगतिकप्रितादजा निहरवहयसुत्रमत्राशि
 यदविहगतजनसिन्हादिनि॥अयउग्रचंद्रिनिहं॥५॥अरुमसूकयात्रा॥
 (नागा॥तालु॥अयज्विके,प्रिह्वनताविमी,यज्जागानीमायिह॥
 गाललायनविखनजा नननेसहिरुनटहासिनीःविकनटदक
 सवदककलनप्रियदलखछिनी॥यामदाहिनिवात्रकसूत्रे

श्रीगो॥मालेश्री॥इयेहं वृत्तं निवेदं॥वंदिदं देवदेवं तालिनि
 दाकि निजागानिर्घगानीः॥रुगनरुल निर्घिहवाहि निषरुउय
 लधालिनि॥अनननयननादक रिउमजाचकलय विनासिनीः
 अमनउरुहिवान माखयदेवगन सवनासिनी॥रुवननरुकीद
 विकरुगाहयननयंकरु अमिनिःनृयनिगीरुयरुयरु रुकेने
 कलहय छिदीयात्रिनी ४॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 रनाग॥श्री॥मनितुननितासिनि, शान्ति ऊं जागिनी॥मिदिनितुयिनि, धर्मेदविद्याधि
 नितुयिनि॥पिनयनसुंधनि, नलमूडमाता॥खगिनितुयिनि, श्रीस्वास्त्यकालिनासिनी

हृदयमृत्तर्गसंगनल स्वदि संगम जंगन नयनवर्ग काङ्गनल ॥ न
कवधुनिसुनि जसुनमा हलदयमनसंगीतसा हनल सकनक नयनक
नह को तुक जसुनमानलन ॥ कननरुदिक कयानयनलसधन सर्वयिवि
नरुदिकलन जदहासविका सदरुदिसहनयवाधनल ॥ नकवि वकंन
रुदिकलल काटिकाटि जसुनजिवलेलने नयन वृही न्यत्रिकिरुयसा
नलसकसाधनल ॥ रगति सुनयति न्नादिदयमौ ग नयन निवितति कनल

सुनिजनन किनतिकिननसलसहयकदगीन नवैगलप्र ॥ जवनप
दशगकमनसुयासगनबनसाहिसननदेवाने नून नानसमाधिसंजम
कि कूनलानन ॥ ज्ञानमाहि जवनमा कि कूनरुदिविषम नरुदिसंसान
जननिविष नानिकवदग नृयतिजगता निविननिरुवतन ॥ ॐ
नग ॥ नयना ॥ नयनयारुन ॥ नकनचंदनवनकासयनकास ॥ ज
तिमनहानडासवाग नयान ॥ ॐ ॥ ॐ चंदन ॥ नयनगनरुदिकमा

प्रयाह समनमदकनरुकरमगुन॥ध्रु॥५॥यथयाकाजततसमकाशगथया
हनससवश्यासथजिफनप्रमप्रिपुहिनामनडाकनितानथचतमप्रिप्रजिह्मि
द्विषादीन॥ध्रु॥१॥सवद्विष्यायजवमनअन्यगवितप्रपातसपनसखदथगीत
नरुहनसयवुवानकमाताजअनियुनथसंसावअसावसियात॥ध्रु॥२॥
संसावसउगहनसमप्रयाहिसमनथहगसमइअविनानलोककमयात
काहनमननिमिदिनेचिदवननननाक्रियागवियखदान॥ध्रु॥३॥लागुत॥

प्राग॥॥गधिदकयोनमतिजाम्नागदात्रुतिप्रसतियवननहकावाचतसति॥॥
द्वन्द्वयाकमिखातकिरुम्नाअनसयात्रिकयतिवयननहकावादाकयति॥॥थ
महनग्वरजातिजाकमखयप्रियातिअसक्तवुवियुकनजिवादाअसति॥॥
कुसवानकयातितिगुसग्ययिअयिनिथिथिनिशसिधसजअम्माकाथति
ति॥॥यमपनमइगतिमिसमकदवितनतिरुमअसायुयजिअजाद्वमति
॥॥लोककमयाजाम्नासक्तिलायममखअनीहसतिअविमानमइगतिहस